University in News on 17 January 2022

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि व कॉलेजों में 23 तक ऑनलाइन क्लास शासन के निर्देश पर अभी बंद रहेंगे कैंपस

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। राजधानी के विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में अभी 23 जनवरी तक ऑनलाइन क्लास ही चलेगी। शिक्षण संस्थान भौतिक रूप से बंद रहेंगे। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए शासन के निर्देश पर लगभग सभी उच्च शिक्षण संस्थानों ने यह निर्णय लिया है।

लविवि प्रशासन के अनुसार शासन के निर्देशानुसार कोविड संक्रमण को देखते हुए विश्वविद्यालय परिसर व सहयुक्त महाविद्यालय पूर्व की भांति 23 जनवरी तक बंद रहेंगे। रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार सिंह ने बताया कि इस दौरान सभी कक्षाएं ऑनलाइन चलेंगी। बता दें कि लविवि में क्लास तो शासन के निर्देश पर 11 से 16 जनवरी तक ऑनलाइन कर दी गई थी, लेकिन परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा था। वहीं अन्य परीक्षाएं भी 15 जनवरी से प्रस्तावित थीं। इस बीच छात्रावासों में रह रहे काफी संख्या में छात्रों के संक्रमित होने के बाद लविवि प्रशासन ने अपने यहां भी परीक्षा स्थगित कर दी है। यहां छात्रावास लगभग पूरी तरह से खाली हो गए हैं। अधिकतर जगह पर संक्रमण की चपेट में आए विद्यार्थी ही रह रहे हैं। विश्वविद्यालय ने इसके लिए क्वारंटीन सेंटर भी बनाए हैं।

उधर, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विवि में भी 23 जनवरी तक ऑनलाइन क्लास चलाने का निर्णय लिया गया है। हालांकि यहां अभी विद्यार्थी छात्रावास में रह रहे हैं। डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में 05 से 15 जनवरी तक शीतकालीन अवकाश घोषित किया गया था। अब विवि प्रशासन ने 31 जनवरी तक ऑनलाइन क्लास चलाने का निर्णय लिया है। रजिस्ट्रार अमित कुमार सिंह ने आदेश जारी कर शिक्षकों को ऑनलाइन क्लास चलाने के लिए कहा है। यहां छात्रावास कोरोना संक्रमण को देखते हुए पहले ही खाली करा लिए गए थे।

शिक्षा कुछ कॉलेजों में 10 हजार से अधिक हैं विद्यार्थी, एनईपी के अनुसार 10 फीसदी कॉलेज होने चाहिए स्वायत्त

लविवि : सहयुक्त कॉलेज नहीं चाहते ऑटोनॉमी

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपने यहां परास्नातक के बाद स्नातक में भी नई शिक्षा नीति (एनईपी) लागू कर दी है। लेकिन विवि के सहयुक्त कॉलेज अब भी इसके लिए पूरी तरह तैयार नहीं दिख रहे हैं। एनईपी के साथ यूजीसी से भी कॉलेजों की स्वायत्तता पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन लविवि से सहयुक्त कॉलेज इसमें रुचि नहीं दिखा रहे हैं।

यूजीसी ने साल 2020 तक 10 फीसदी कॉलेजों के स्वायत्त होने की बात कही है। दूसरी तरफ लविवि से सहयुक्त कॉलेजों की संख्या 500 से अधिक पहुंच चुकी है, स्वायत्त कॉलेज के नाम पर मात्र नेशनल पीजी कॉलेज ही है। राजधानी में श्री जय नारायण पीजी कॉलेज, शिया पीजी कॉलेज की छात्र संख्या लगभग 10 हजार है, जो लगभग लविवि के बराबर है। इसके बावजूद ये स्वायत्त नहीं हैं। स्वायत्त होने पर कॉलेज को अपना पाठ्यक्रम तैयार करने तथा परीक्षा कराने की आजादी होती है। हालांकि, डिग्री उसे विवि से ही मिलती है। वहीं, सामान्य रूप से कॉलेज पाठ्यक्रम व परीक्षा दोनों के लिए विवि पर आश्रित होते हैं। संबद्ध कॉलेजों की संख्या बढ़ने पर विवि को विशेषकर परीक्षा में कराने में दिक्कत होती है। क्योंकि एक साथ कई लाख विद्यार्थियों की परीक्षा कराना आसान नहीं होता है। इतने विद्यार्थियों का समय से रिजल्ट निकालना भी हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है। इसके कारण विश्वविद्यालय सिलेबस अपडेट करने की प्रक्रिया टालते रहते हैं और पढ़ाई की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसको देखते हुए यूजीसी ने स्वायत्तता पर जोर देना शुरू किया है।

आर्थिक संकट से भी मिलेगा छुटकारा

इस समय ज्यादातर कॉलेज आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। स्वायत्त होने पर कॉलेज को इससे छुटकारा पाने का एक रास्ता मिल सकता है। असल में सभी कॉलेजों को विद्यार्थियों से मिली परीक्षा फीस की राशि विवि को देनी होती है। लविवि में इस समय किसी भी पाठ्यक्रम की न्यूनतम परीक्षा फीस दो हजार रुपये प्रति सेमेस्टर है। बड़े कॉलेज इसके हिसाब से लविवि को सालाना करीब चार करोड़ रुपये देते हैं, जबकि उनकी परीक्षा अधिकतम 40 लाख रुपये में हो सकती है। बाकी धनराशि महाविद्यालयों के विकास में खर्च की जा सकती है।

नेशनल कॉलेज एकमात्र स्वायत्त कॉलेज

नेशनल पीजी कॉलेज एकमात्र स्वायत्त कॉलेज है। इसे कॉलेज विद पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस का दर्जा भी प्राप्त है। महाविद्यालय ने न सिर्फ स्वायत्तता हासिल की बल्कि शैक्षणिक गुणवत्ता के मामले में नजीर भी पेश की है। यहां तक कि बीकॉम में दाखिले के लिए यहां सबसे ज्यादा मारामारी मचती है। महाविद्यालय का बीकॉम ऑनर्स का पाठ्यक्रम किसी भी विवि से बेहतर बताया जा सकता है।

> विश्वविद्यालय से सहयुक्त बड़े कॉलेजों को इससे लिए कहा गया है। कुछ कॉलेज 10-10 हजार की क्षमता वाले हैं। ऑटोनॉमी के लिए नियमित प्राचार्य व ए ग्रेड होना जरूरी है। हम कॉलेजों को इसके लिए प्रेरित कर रहे हैं। उनको किसी मदद की जरूरत होगी तो हम वह भी करेंगे। **प्रो. आलोक कुमार राय,** कुलपति, लविवि

i-NEXT PAGE 2

बाजरा अब पहले से भी अधिक होगा पॉवरफुल

उपज में जिंक और आयरन की मात्रा बढ़ाने पर करेगा शोध करेगी लखनऊ यूनिवर्सिटी

LUCKNOW (15 Jan) : बाजरे का नियमित सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है. अब लखनऊ विश्वविद्यालय पौधों की वृद्धि करने वाले जीवाणुओं के माध्यम से बाजरे में जिंक और आयरन की मात्रा बढ़ाने पर शोध करेगा. इसके लिए राज्य सरकार के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस योजना के तहत बायो केमेस्ट्री विभाग की शिक्षिका डॉ. कुसुम यादव को प्रोजेक्ट मिला है. इस शोध कार्य के लिए सवा चार लाख रुपये का बजट मंजूर किया गया है.

लोगों में आयरन की कमी

डॉ. कुसुम यादव ने बताया कि जिंक और आयरन की कमी से भारत में 80 फीसद गर्भवती महिलाएं, 52 फीसद सामान्य महिलाएं और छह से 35 आयु वर्ग के 74 फीसद बच्चे आयरन की कमी से पीड़ित हैं. पांच साल से कम उम्र के लगभग 52 फीसद बच्चों में जिंक की भी कमी है. इसलिए बाजारे पर शोध करके

इस तरह होगा शोध

डॉ. कुसुम यादव बताती हैं कि पौधों की वृद्धि करने वाले जीवाणु पौधों की जड़ों में होते हैं. इनका उपयोग करके बाजरे में आयरन और जिंक का पोषण बढ़ाया जाएगा. सबसे पहले ऐसे जीवाणु जो आधिक गर्मी में भी जीवित रह सकते हैं, उनका प्रवर्धन उस मिट्टी से किया जाएगा. इस कार्य में गुजरात के सरदार कृषिनगर दंतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञानी डॉ. अनुराग यादव सहयोग करेंगे. ऐसे जलवायु परिवर्तन अनुकूलित जीवाणुओं को इन बाजरे के पौधों व बीज के साथ या खाद में मिलाकर शोध करेंगे. इसमें आयरन और जिंक के साल्ट भी डालेंगे तथा अवशोषित आयरन एवं जिंक की मात्रा नापेंगे.

इसमें जिंक और आयरन बढ़ाने पर कार्य किया जाएगा.